अधिक है कम
कम है अधिक

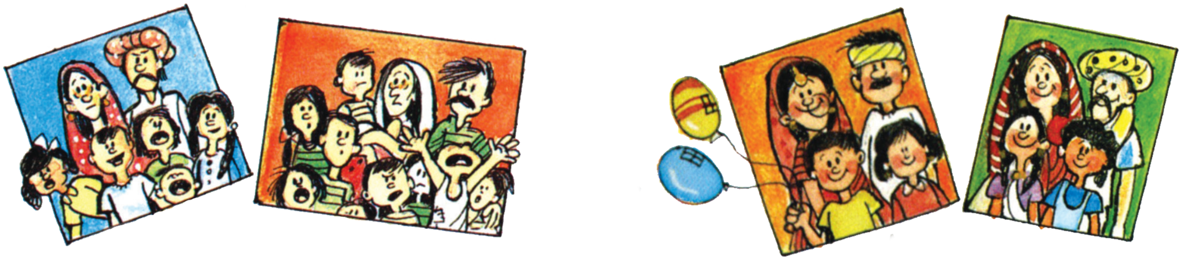

गीता धर्मराजन

चित्रांकनः सुमति

यह किताब

....

की है।

dFkk d fo"k; e

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities."
— **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]."
— **Papertigers**

Copyright © KATHA

अधिक है कम

कम है अधिक

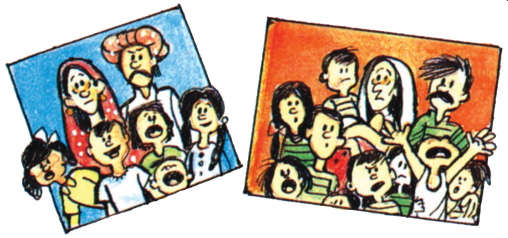

गीता धर्मराजन

चित्रांकन: सुमति

KATHA

Copyright © KATHA

अगर यह मान लें कि ...
दुनिया में केवल 2 ही गाँव हैं–
'अ' और 'ब'। सन् 1900 में हरेक गाँव में 16 परिवार थे।
हर परिवार के पास 20 एकड़ ज़मीन थी।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

तब गाँववालों ने निश्चय किया कि

क) जब तक लड़की 20 साल की नही हो जाती, वह बच्चे नही पैदा करेगी।

ख) हर परिवार में 2 बच्चे होंगे।

ग) लड़के और लड़कियों को ज़मीन का बराबर हिस्सा मिलेगा।

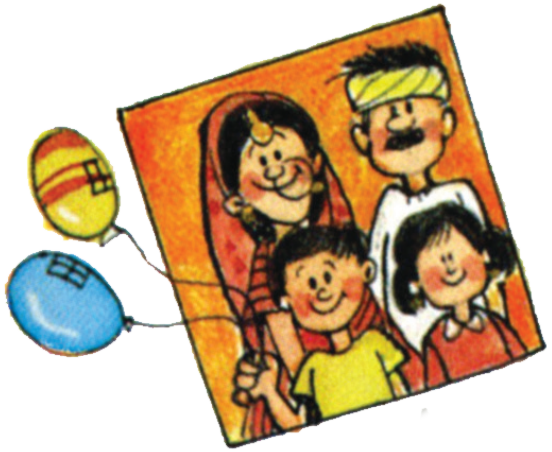

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

हर 20 साल बाद हरेक परिवार में 2–2 बच्चे पैदा हुए। बच्चे बड़े हुए ... उनकी शादियाँ हुईं ... आज, हरेक गाँव में 80 परिवार हैं। और, हर परिवार के पास 4 एकड़ ज़मीन है। न हाथ की कमी, न ही ज़मीन की।

Copyright © KATHA

और अगर यह माने कि ...
दुनिया में केवल 2 ही गाँव हैं–
'स' और 'द'। सन् 1900 में हरेक गाँव में 16
थे। और, हर परिवार के पास 20 एकड़ जमीन थी।

Copyright © KATHA

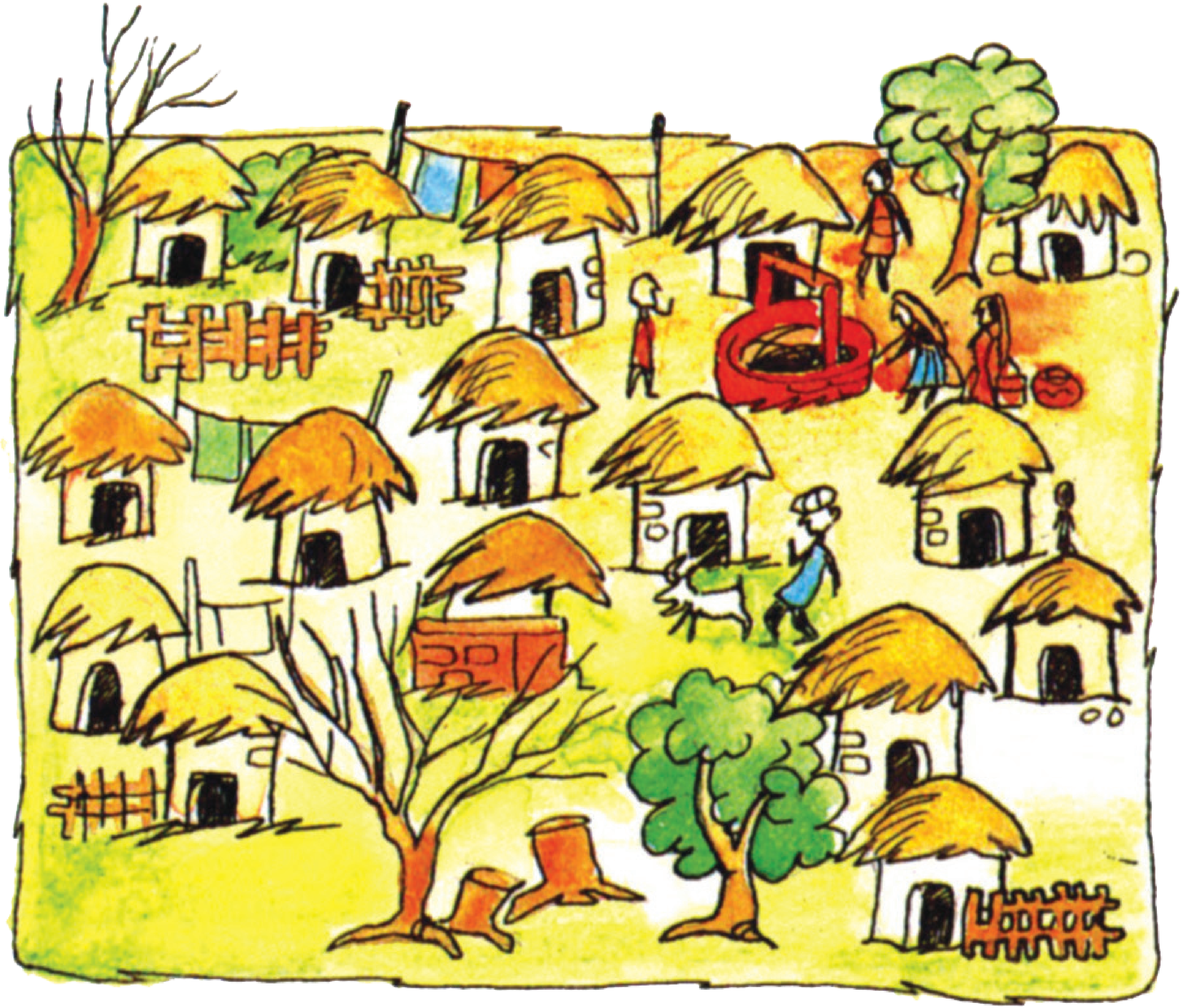

तब गाँववालों ने निश्चय किया कि . . .

क) लड़की की शादी 18 साल की उम्र में होगी।

ख) बच्चे भगवान की देन है।

ग) हर परिवार में 4 बच्चे–ज़मीन पर काम करने के लिए अधिक हाथ।

घ) लड़के और लड़कियों को ज़मीन का बराबर हिस्सा मिलेगा।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

हर 20 साल बाद, हरेक परिवार में 4 बच्चे पैदा हुए बच्चे बड़े हुए ... उनकी शादियाँ हुईं ... आज, हरेक गाँव में 496, परिवार हैं। और, हर परिवार के पास 2 तिहाई एकड़ से भी कम ज़मीन है।

हाथ की तो नहीं है कमी ...
पर कहाँ है ज़मीन?

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

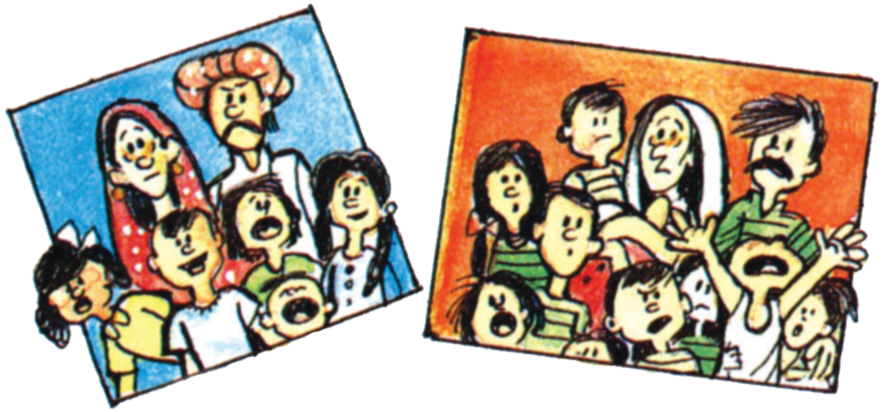

xhrk /kejktu बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय* की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

fp=kdu% lefr

Copyright © KATHA
Copyright © KATHA

एक गाँव है उल्लासपुर, जिसकी सोच थी व्यावहारिक। और वहीं दूसरी तरफ है एक रूढ़िवादि गाँव, अंधेरनगरी। किस गाँव में थी ज़्यादा खुशहाली, किस में थी परेशानी? जानने के लिए पढ़िए इन दो गाँव की दिलचस्प कहानी।

Copyright © KATHA